आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 4 अंक : 11 जुलाई, 2017 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा

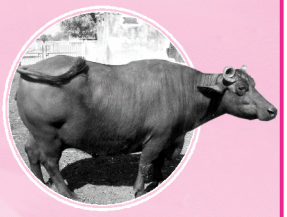

कुलपति सन्देश

साझा खेती व पशुपालन से ही तरक्की सम्भव

प्रो. बी.आर. छीपा

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाईयों और बहनों!

राम–राम सा! मैं अपने को धन्य समझता हूँ कि मुझे देश के प्रतिष्ठित राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है। इसके लिए मैं माननीय कुलाधिपति श्री कल्याण सिंह और माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे का आभार व्यक्त करता हूं जिनके मार्ग–दर्शन में कृषि और पशु चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में अपनाए जा रहे नवाचारों का लाभ कृषक और पशुपालकों को मिल रहा है। कृषि और पशुपालन के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित हुए हैं। मित्रों! कृषि और पशुपालन इस देश की अर्थव्यवस्था के आधार स्तम्भ है जो एक दूसरे के पूरक हैं। सरकार के मार्गदर्शन में कृषि और पशुपालन व्यवसाय को अभूतपूर्व सहयोग और नई दिशा मिल रही है। इसी के परिणामस्वरूप गत दो वर्षों में विशेषकर इस वित्त वर्ष में विकास दर रिकार्ड 4.5 प्रतिशत तक पहुंच गई है जो कि महत्त्वपूर्ण और सराहनीय है। मेरा मानना है कि किसान की खुशहाली में कृषि के साथ–साथ पशुपालन की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यद्यपि सूखा, बे–मौसम बरसात, भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाओं ने किसानों को प्रभावित किया है लेकिन फिर भी किसान भाईयों ने सरकार के सहयोग एवं नेतृत्व में अन्न उत्पादन में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। ऐसे में पशुपालन ने हमारा साथ दिया है। पशुपालन से रोजगार उत्पन्न होते हैं और उससे पैदा होने वाला दूध खाद्य सुरक्षा में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पशुजन्य प्रोटीन पदार्थ जैसे दूध, मक्खन, पनीर आदि प्रत्येक परिवार में आहार का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। स्टार्ट–अप इंडिया कार्यक्रम के अन्तर्गत किसानों को खेती के साथ–साथ उद्योग अपनाने की भी प्रेरणा और दिशा मिली है। कृषकों व पशुपालकों के हित में राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न विकास और कल्याणकारी कार्यक्रमों से पशुपालन, डेयरी और मछली पालन क्षेत्र का भी विकास हो रहा है। अब समय आ गया है कि कृषि के साथ–साथ हम पशुपालन के पारंपरिक तौर–तरीकों के साथ ही विज्ञान और तकनीक को अपनाकर वैज्ञानिक पशुपालन की ओर ध्यान दें। लागत को कम करके अधिक पैदावार और जैविक उत्पादन के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण जरूरी है। इसके साथ ही विपणन और खाद्य प्रसंस्करण की ओर ध्यान देकर अपनी लागत का उचित मूल्य प्राप्त करने के लिए भी जागरूक रहना होगा।

(प्रो.बी.आर.छीपा)

प्रो. बी.आर. छीपा ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति का कार्यभार संभाला

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति का कार्यभार 28 जून को स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति एवं देश के प्रख्यात मृदा रसायन वैज्ञानिक प्रो. बी.आर. छीपा ने संभाल लिया। राज्यपाल एवं कुलाधिपति के निर्देशानुसार जारी आदेश के अनुसार प्रो. ए.के. गहलोत, कुलपति, राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर का कार्यकाल 28 जून 2017 को पूर्ण होने के कारण यह कार्यभार प्रो. बी.आर. छीपा, कुलपति, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर को अतिरिक्त प्रभार के रूप में दिया गया है।

मुख्य समाचार

जोधपुर में खुलेगा पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र

राज्य सरकार के निर्देशानुसार नगर निगम जोधपुर द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय को 5 बीघा भूमि का निःशुल्क आंवटन किया गया है। स्वायत्त शासन विभाग के अतिरिक्त निदेशक के अनुसार नगर निगम जोधपुर द्वारा गेंवा ग्राम के खसरा नम्बर 8 में से सामुदायिक सुविधाओं के लिए संस्थानिक उपयोगार्थ 5 बीघा भूमि आंवटन की स्वीकृति जारी की गई है। इस भूखण्ड पर प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र स्थापित किया जाएगा। यह राज्य का 14वां प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र होगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय का 13वां केन्द्र झुझूंनू में निर्माणाधीन है। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के 12 जिलों में पशुपालकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु ये प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र कार्यशील है। इनमें सूरतगढ़, लूनकरणसर, बाकलिया (नागौर), सिरोही, बोजून्दा (चित्तौड़गढ़), डूंगरपुर, चूरू, कुम्हेर (भरतपुर), धौलपुर, टोंक, कोटा और अजमेर में केन्द्र स्थापित है। इस केन्द्र में 3 विषय विशेषज्ञों की सेवाओं के साथ पशुचिकित्सा की रोग निदान प्रयोगशालाओं की स्थापना करके पशुचिकित्सा सेवाओं को प्रभावी तरीके से लागू किया जाएगा। पशुचिकित्सा अनुसंधान और सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। विश्वविद्यालय द्वारा शुरू की गई प्रसार सेवाओं, पशुपालन उपयोगी प्रकाशनों और अन्य कार्यों को आम पशुपालकों तक पहुँचाने में भी इस केन्द्र की अहम भूमिका होगी। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा जिले के पशुपालक–कृषकों के आर्थिक उन्नयन के लिए स्वस्थ पशु और उनसे उत्पादन को बढ़ाने के तौर–तरीकों के बारे में शिक्षित–प्रशिक्षित किया जाएगा। गांव और जिले के सुदूर क्षेत्रों में भी प्रशिक्षण, प्रक्षेत्र दिवस, प्रदर्शनियां और पशु स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन कर पशुपालकों को लाभान्वित किया जाएगा।

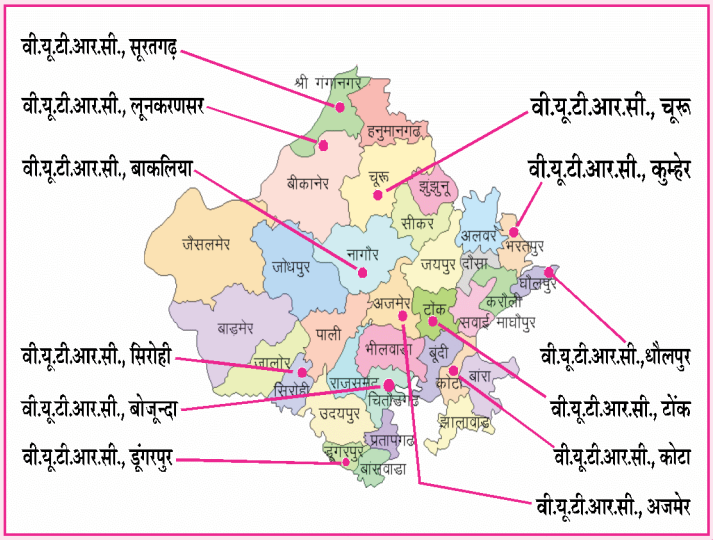

प्रशिक्षण समाचार

बीकानेर के गौ मित्रों का सात दिवसीय प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय में बीकानेर शहर के 15 गौ मित्रों का "गौ पशुओं का प्राथमिक उपचार विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम पशु आपदा प्रबंधन एवं तकनीकी केन्द्र पर 22–28 जून तक आयोजित किया गया। देश में पहली बार निराश्रित गौधन की रक्षार्थ और आपात कालीन प्राथमिक उपचार के लिए गौ मित्रों का सघन प्राथमिक प्रशिक्षण कार्यक्रम रखा गया है। राजुवास ने निराश्रित पशुधन की चिकित्सा और उपचार के प्राथमिक प्रशिक्षण के लिए दीर्घ और लघु अवधि के प्रशिक्षण और रिफ्रेशर पाठ्यक्रमों का निर्धारण कर एक महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ा है। पशु आपदा प्रबंधन एवं तकनीकी केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक एवं प्रशिक्षण के प्रभारी डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि दुर्घटना में घायल, अस्थि भंग, अग्नि पीड़ित, तापघात या अन्य आपदा पीड़ित पशुओं तथा शल्य क्रिया पश्चात् उचित देखभाल प्राथमिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में शामिल है। बीकानेर शहर के प्रत्येक वार्ड में गौ मित्र मनोनीत करके शहर के सभी 60 वार्डों से 15–15 गौ मित्रों के चार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा 210 पशुपालक प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 13, 15, 17, 21, 24, 28 एवं 30 जून को गांव गालड़, देराजसर, नरवासी, हरपालु, ढाणी मोजी, ढाणा–पटासात्यु एवं देपालसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 210 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 7, 8, 9, 12, 17 एवं 19 जून को गांव रामसरा जाखड़ान, 15 एसजीआर, बीरमाना, 5 सीएम, सोमासर एवं मडेरा गांवो में आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में 177 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., सिरोही द्वारा 5, 12, 14, 19 एवं 22 जून को गांव वराडा, रोहिडा, कोजरा, दत्ताणी एवं दांतराई गांवो में आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में 134 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., बाकलिया–लाड़नू द्वारा 6, 7, 8, 12, 13, 14, 15 एवं 16 जून को गांव बकवास, प्यावां, बालिया, सिगरावट कलां, जेवलियावास, खुड़ी निम्बी, खुनखुना एवं अड़सीगा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 204 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 8, 14, 15 एवं 22 जून को गांव सांकरिया, जसवन्तपुरा, दौलतपुरा, खिरिया गेट सरवाड गांवों.में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविर में 154 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा 380 पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर द्वारा 15, 17, 19, 21, 23, 24, 27 एवं 29 जून को गांव देवल, मैनात फला, पाडवा, गणेशपुर, दामडी, मिलड़ी, ओड़ाफला एवं नेपालपुरा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 380 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 3, 5, 7, 9, 13, 16, एवं 22 जून को गांव गादौली, नगलामैथना, सलिमपुर, मोरका, कयाजपुरा, छिछरवाडी एवं मिलकपुर एवं 15 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित शिविरों में 17 महिला पशुपालकों सहित कुल 167 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में 296 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 14, 15, 16, 17, 19, 20 एवं 22 जून को गांव टीपा, बम्बोर, इन्दोकिया, हरभगतपुरा, खानपुरा, गादोपद एव देवली भांची तथा दिनांक 13 एवं 21 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 296 पशुपालकों एंव कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 7, 8, 13, 15, 21 एवं 28 जून को रोझा, कांकड़वाला, सहनीवाला, डेलना छोटा, डेलना बड़ा, जाखरावाली गांवो में आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में 199 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा 250 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 3, 5, 9, 13, 17, 20, 21 एवं 22 जून को कोटसुआ, रंगपुर, थुमड़ा, चन्द्रावला, मेहन्दी, अरनिया, पीसाहेडा एवं मण्डावरी गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 250 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 3, 5, 6, 8, 9, 12, 14, 16 एवं 17 जून को गांव लसड़ावन, भाम्भुपुरा, चिकसी, धनेतकलां, ताइ, अरनिया जोशी, चारलियां, बांसा एवं मुरलियां गांवों में तथा 20 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में 414 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा 437 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 6, 7, 9, 12, 13, 17 एवं 19 जून को गांव रंजीतपुरा, सहजपुर, भूरा का पुरा, रजौराकला, मालिकपुर, बज्जरगढ़, बकायद एवं कमलापुरा गांवों में तथा दिनांक 21 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 437 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा 23 एवं 24 जून को गांव उज्जजवास एवं ढीलकी जाटान में एक दिवसीय कृषक–पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 61 कृषक–पशुपालकों ने भाग लिया।

वर्षा ऋतु के प्रारंभ में पशुओं की देखभाल कैसे करें !

राजस्थान राज्य के दक्षिणी जिलों में प्रायः जुलाई माह में वर्षा का आगमन हो जाता है और इससे पहले कई स्थानों पर मानसून पूर्व की वर्षा भी अच्छी हो जाती है। वैसे तो पशुपालक इस बदलते मौसम के बारे में खबरदार रहते हैं फिर भी इस मौसम में अपने पशुओं की विशेष देखभाल की आवश्कता रहती है। हालांकि जुलाई माह में वर्षा पूर्ण रूप से शुरू नहीं होती हैं फिर भी सामान्यतौर पर वातावरण में नमी बढ़ जाती है और कई स्थानों पर उमस भी अधिक हो जाती है। जिन स्थानों पर वर्षा शुरू हो गई है वहां पर कच्ची हरी घास उगती है जिसे अधिक मात्रा में चरने से पशु को कई प्रकार की परेशानियां होती हैं। कुछ स्थानों पर अधिक वर्षा से जल भराव की स्थिति भी सामने आती है तथा गंदे पानी से चारा –पानी दूषित होने की सम्भावना रहती है। अतः इस समय पशुओं में विभिन्न प्रकार की समस्याएँ देखने को मिल सकती हैं। अतः पशुपालकों को इस बदलते मौसम में अपने पशुओं को स्वस्थ रखने के लिये निम्न उपायों पर ध्यान देना चाहिये :

1. उमस के कारण गाय–भैंस वातावरणीय तनाव से ग्रसित होकर अन्य रोग जैसे गलघोंटू व लंगड़ा बुखार से प्रभावित हो सकते हैं। यह दोनों खतरनाक रोग हैं जिसमें अल्प समय में प्रभावित पशु की मृत्यु हो जाती हैं। पशु पालक को चाहिए कि उमस के समय पशु को ज्यादा काम में न लें तथा उसे खुले वातावरण में रखें।
2. पशुओं को शुरूआती वर्षा में भीगने से बचायें। विशेषकर बछड़े–बछड़ियों, मेमनों में भीगने से न्यूमोनिया की सम्भावना रहती है कई बार इस मौसम में ओलावृष्टि भी हो जाती है। अतः पशुओं को ओलों की मार से भी बचाए।
3. शुरू की बरसात में कच्चा हरा चारा बहुतायत में उग आता है। इस हरे चारे को अत्याधिक मात्रा में खाने से पशुओं को कई प्रकार की तकलीफ हो जाती है। मुख्यतः भेड–बकरी फड़किया रोग से प्रभावित हो जाती है। यदि चारागाह में नया हरा चारा उग आया है तो भेड –बकरियों को जरूरत से ज्यादा न चरायें ताकि उन्हें फड़किया से प्रभावित होने से बचाया जा सके।
4. इसी प्रकार अत्याधिक चारे से दस्त रोग की सम्भावना भी रहती है। अतः कच्चे हरे चारे की तूडी के साथ मिलाकर नियंत्रित मात्रा में खिलाएं।
5. वर्षा ऋतु के प्रारम्भ से ही जल भराव की स्थिति पर ध्यान दें एवं पशु बाडे से जल निकासी के पर्याप्त प्रबन्ध करें। दूषित चारा–पानी के सेवन से पशु आंत्र–रोगों से ग्रसित हो सकता हैं। साथ ही आंतरिक परजीवी भी पशु को प्रभावित कर सकते हैं। पशुओं को दूषित व संक्रमित चारा–पानी सेवन से बचाएं ताकि आंतरिक परजीवी और दस्त रोग इत्यादि से पशु प्रभावित न हो सकें।
6. इन सब परेशानियों के अतिरिक्त इस मौसम में सर्प दंश की भी बहुत संभावना रहती है। पशुपालक पशु बाड़े में प्रकाश की समुचित व्यवस्था रखें ताकि बाडे में सर्प इत्यादि को देखा जा सके।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

भामाशाह पशु बीमा योजना - राज्य सरकार की महत्त्वपूर्ण योजना

उद्देश्यः—

- ❖ राज्य के पशुपालकों को उनके पशुधन का बीमा करवाकर आर्थिक रूप से संबल प्रदान करना।
- ❖ पशुधन के मृत्यु हो जाने पर पशुपालक को आर्थिक हानि से बचाना।

पात्रताः—

- ❖ राज्य के समस्त भामाशाह कार्ड धारक पशुपालक इस योजना के लिए पात्र हैं।
- ❖ सभी नस्ल के स्वस्थ दुधारू पशु (गाय, भैंस) भार ढोने वाले (बैल, घोड़ा, गधा, ऊंट) तथा भेड़ एवं बकरी या सूअर का बीमा अनुदानित प्रीमियम दरों पर किया जाता है।
- ❖ एक परिवार के अधिकतम पांच केटल यूनिट का बीमा करवाया जा सकता है तथा परिवार का आधार मनरेगा अधिनियम 2005 के अनुसार परिभाषित होगा।
- ❖ पशु का बीमा 1 वर्ष या 3 वर्ष के लिए करवाया जा सकता है।
- ❖ अन्य योजना के अन्तर्गत बीमित पशु इस योजना में सम्मिलित नहीं होंगे।

कैटल यूनिट – 1 गाय, भैंस, ऊंट, घोड़ा, गधा आदि या 10 भेड़, बकरी या सूअर। अतः एक परिवार में अधिकतम 5 कैटल यूनिट का बीमा करवाया जा सकता है तथा 5 गाय या 5 भैंस या 50 भेड़, 50 बकरी।

प्रीमियम :—

पशु का विवरण	प्रीमियम दर (प्रतिशत में)	
	1 वर्ष हेतु	3 वर्ष हेतु
दुधारू पशु (गाय, भैंस)	2.79	7.4
भार ढोने वाले (घोड़ा, गधा, ऊंट, बैल)	3.5	9.0
अन्य पशु (भेड़, बकरी, सूअर)	4.00	10.5

पशु के मूल्य की गणनाः—

पशु के मूल्य की गणना पशु चिकित्सक, बीमा कम्पनी के प्रतिनिधि और पशुपालक की आपसी सहमति से तय की जायेगी। दुधारू गाय के लिए प्रति लीटर रू. 3000 न्यूनतम, भैंस के लिए 4000 रू. न्यूनतम की दर से मूल्य निर्धारित किया जायेगा। अधिकतम मूल्य निम्नानुसार होगाः—

दुधारू गाय	:—	40,000
दुधारू भैंस	:—	50,000
अन्य पशु (10 भेड़, 10 बकरी, 10 सूअर)	:—	50,000
भार ढोने वाले पशु (घोड़ा, गधा, सांड, ऊंट)	:—	50,000

अनुदानः—

सामान्य श्रेणी के पशुपालक : 50 प्रतिशत

अजा/अजजा/बीपीएल श्रेणी के पशुपालक : 70 प्रतिशत

बीमा प्रक्रियाः—

पशुपालक को पशु बीमा हेतु नजदीकी पशुचिकित्सालय से सम्पर्क कर प्रस्ताव पत्र और बीमा स्वीकृति पत्र भरकर अपने हिस्से की राशि पशु चिकित्सालय/बीमा कर्मी/ई—मित्र को जमा करवानी होगी। बीमित पशु को टैग लगाया जाना, टैग के साथ पशु का फोटो व पशु के साथ

पशुपालक का फोटो लेना आवश्यक होगा, इसका सारा व्यय बीमा कम्पनी द्वारा व्यय किया जावेगा।

पशुपालक को पशु बीमा हेतु निम्न दस्तावेज आवश्यक होंगे।

1. आवेदन—पत्र
2. पशु स्वास्थ्य प्रमाण—पत्र
3. पशु के कान में टैग सहित पशुपालक का फोटो
4. भामाशाह कार्ड की छाया प्रति।
5. पशुपालक श्रेणी से सम्बन्धित प्रमाण—पत्र
6. बैंक पास बुक
7. आधार कार्ड (यदि हो तो)

पशु का स्वास्थ्य प्रमाण—पत्र सरकारी पशु चिकित्सक द्वारा जारी किया जायेगा।

भामाशाह पशु बीमा योजना का लाभ :—

रोग या दुर्घटना से बीमित पशु की मृत्यु पर 100 प्रतिशत बीमा लाभ

क्लेम की प्रक्रिया :—

1. बीमित पशु की मृत्यु होने पर 6 घण्टे के भीतर बीमा कम्पनी के कार्यालय/प्रतिनिधि, संयुक्त निदेशक, पशुपालन विभाग को सूचित करना होगा (फोन,एस.एम.एस, ई—मेल या व्यक्तिशः)
2. पशु की रात्रि में मृत्यु हो जाने की स्थिति में अगले दिन प्रातः तक सूचित किया जा सकता है।
3. बीमा कम्पनी द्वारा सूचना प्राप्त होने पर सामान्यतः 6 घण्टे की अवधि में मृत पशु का सर्वे करवाए जाने हेतु सर्वेयर नियुक्त किया जाएगा।
4. सर्वेयर की उपस्थिति में मृत पशु का सर्वे करवाया जाना और पोस्ट मार्टम करवाया जाना आवश्यक होगा।
5. मृत पशु का पोस्ट मार्टम पशु चिकित्सक द्वारा करते हुए फोटो भी ली जानी आवश्यका होगी।
6. बीमा कवर/बीमा पॉलिशी की प्रति बीमा कम्पनी को पशुपालक को क्लेम हेतु उपलब्ध करवानी होगी। बीमा फॉर्म भरकर बीमा कम्पनी को जमा करवाया जायेगा।
7. पशु की पोस्ट मार्टम रिपोर्ट, पोस्टमार्टम करते हुए फोटो एवं टैग बीमा कम्पनी को जमा करवाना होगा।

अधिक जानकारी के लिए नजदीकी पशु चिकित्सालय, जिला संयुक्त निदेशक कार्यालय, पशुपालन विभाग से सम्पर्क कर सकते हैं।

डॉ. कमलेश कुमार धवल, डॉ. मैना कुमारी एवं डॉ. देवी सिंह राजपूत
पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर

गलघोंटू तथा लंगड़ा बुखार : बरसात में होने वाले प्रमुख संक्रामक रोग

बरसात के दिनों में पशुओं में संक्रमित बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है क्योंकि मौसम में नमी बढ़ जाती है तथा जीवाणुओं को पनपने के लिए उपयुक्त वातावरण मिल जाता है। बरसात के दिनों में पशुओं में कई संक्रामक बीमारियां होने का खतरा बढ़ जाता है, जैसे कि गलघोंटू, लंगड़ा बुखार, खुरपका मुंहपका, फड़किया, न्यूमोनिया, पी.पी.आर रोग, सर्रा तथा थिलेरियोसिस आदि प्रमुख रोग हैं। जीवाणु जनित रोगों में गलघोंटू तथा लंगड़ा बुखार प्रमुखता से बरसात के दिनों में गौवंश को प्रभावित करता है।

गलघोंटू

यह रोग घुड़का, नाविक बुखार, एच.एस. तथा पाश्चुरेल्लोसिस आदि नामों से भी जाना जाता है। यह गायों व भैंसों में तेजी से फैलने वाला जीवाणु जनित रोग है। जयपुर, कोटा, बीकानेर तथा भरतपुर संभाग में यह रोग अधिक होता है।

रोग कारक :– यह पाश्चुरेला मल्टोसिडा नामक जीवाणु के कारण होता है। यह एक ग्राम छोटी छड़नुमा आकृति वाला जीवाणु है जो कि अभिरंजित करने पर दोनों सिरों पर अभिरंजित होने वाला जीवाणु है। यह अधिकांश भैंसों को संक्रमित करता है। यह युवा पशुओं में अधिक होता है। अर्थात 6 माह से 2 वर्ष की उम्र के पशुओं में यह रोग अधिक होता है। नमीयुक्त वातावरण में रहने, अधिक कार्य करने तथा लम्बी दूरी की यात्रा करने से तनावग्रस्त पशु इस रोग से जल्दी प्रभावित होता है।

कैसे फैलता है :– रोग के वाहक पशुओं में इस रोग के जीवाणु श्वसन नली में रहते हैं। जहां से यह लार के द्वारा खाद्य पदार्थों में पहुंचते हैं तथा उन्हें दूषित करते हैं। दूषित चारा, पानी व दाना खाने से यह रोग सामान्य पशुओं में फैलता है।

लक्षण :– यह रोग बहुत ही घातक व तीक्ष्ण रोग है। पशु के शरीर में जीवाणु के पहुंचने के 2–5 दिन में ही लक्षण प्रकट होने लगते हैं। इसके प्रमुख लक्षणों में तेज बुखार, शरीर में कंपकपाहट, गले में पीड़ा दायक सूजन जो गर्म कठोर होकर आगे के दोनों पैरों के बीच तक आ जाती है जिससे पशु को श्वास लेने में दिक्कत होती है। शरीर की श्लेष्म झिल्लियां लाल हो जाती है तथा लगातार लार का स्त्रावण होता है। गंभीर स्थिति में रोगी पशु की मृत्यु हो सकती है।

बचाव व उपचार :–

- गलघोंटू रोग से मृत पशुओं को वैज्ञानिक तरीकों से गाड़े या जलाएं।
- रोगी पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए।
- पशु शाला में नियमित साफ–सफाई करनी चाहिए तथा समय–समय पर निर्जमिकारकों का छिड़काव करते रहना चाहिए।
- हर साल बारिश शुरू होने से पहले मई, जून महीने में ही पशुओं में इस बीमारी का टीका लगवाएं।
- रोग से प्रभावित पशुओं को तुरन्त पशु चिकित्सक को दिखाना चाहिए तथा रोग की शुरूआती अवस्था में ही उपचार शुरू कर देना चाहिए। वरना पशु के बचने की संभावनाएं कम होती है।

लंगड़ा बुखार

यह रोग ज़हरबाद, काला बुखार, क्वार्टर ईल तथा ब्लैक लेग आदि नामों से भी जाना जाता है। यह एक जीवाणु जनित रोग है। जो मुख्यता गाय, भैंसों में पाया जाता है। जिसमें पशु के कंधे या पुट्ठे की मांसपेशियों में गैस भरी सूजन हो जाती है तथा तेज बुखार सेप्टिसिमियां के कारण पशु की मौत हो जाती है। गर्म व नम जलवायु वाले राज्यों में यह जल्दी फैलता है। वर्षा ऋतु में यह इस रोग का प्रकोप अधिक होता है। यह मुख्यता गौवंश में अधिक होता है। भैंसों, बकरियों, भेड़ों तथा घोड़ों में भी यह होता है।

रोग कारक :– यह रोग क्लोस्टरीडियम चौवई नामक जीवाणु से होता है। जो कि एक अवायवीय श्वसन वाला, ग्रामधनी, छड़नुमा जीवाणु होता है। यह जीवाणु बीजाणुओं का निर्माण करता है। जो प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करते हुए कई सालों तक मिट्टी में जीवित रह सकता है।

कैसे फैलता है? :– यह रोग मिट्टी द्वारा फैलता है। इस रोग के जीवाणु मिट्टी में संक्रमित प्राणियों के मल द्वारा या उसकी मृत्यु होने पर उसके शव द्वारा पहुंचते हैं। जीवाणु दूषित चारागाह में चरने से आहार के साथ स्वस्थ पशु के शरीर में प्रवेश कर जाता है। इसके अलावा शरीर पर मौजूद घाव के ज़रिये भी इसका संक्रमण होता है। भेड़ों में ऊन कतरने, बंधिया करने तथा सर्जिकल कार्यों के दौरान भी संक्रमण हो सकता है।

लक्षण :– पशु में तेज बुखार के साथ कंधे, पुट्ठे या गर्दन की मांसपेशियों में सूजन आ जाती है जिससे पशु लंगड़ा कर चलता है। शुरूआत में यह सूजन पीड़ादायक होती है। जो बाद में टण्डी तथा पीड़ारहित हो जाती है। सूजन में गैस भरी होने के कारण बाहर से इस स्थान को दबाने से चरचराहट की आवाज आती है। यदि सूजन की जगह पर चीरा लगाया जाये तो काले रंग का झागदार रक्त निकलता है। यह रोग शीघ्रता से पूरे शरीर में फैलता है एवं रोगी पशु नीचे गिर जाता है। लक्षण प्रारम्भ होने के 1–2 दिन में रोगी पशु की मृत्यु हो सकती है।

बचाव व उपचार :–

- रोगी पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से दूर रखना चाहिए।
- इस रोग से ग्रसित पशु के शव का निस्तारण वैज्ञानिक तरीके से जमीन में गाड़ कर या जलाकर करना चाहिए।
- सूजन वाली जगह चीरा नहीं लगाना चाहिए क्योंकि खुले हुए घाव के जीवाणु बाहर निकलकर वातावरण को संक्रमित कर देते है।
- इस रोग की रोकथाम के लिए मानसून से पहले इसका टीकाकरण किया जाना चाहिए।
- टीकाकरण 03 माह से अधिक आयु वाले पशुओं में करना चाहिए।
- रोगी पशु का उपचार पशु चिकित्सक से प्रारम्भिक अवस्था में करवाना चाहिए। पेनीसिलीन की हाई डोज इसमें लाभकारी सिद्व होती है।

डॉ. विक्रम सिंह देवल, डॉ. अन्जू चाहर, डॉ. एफ.सी.टूटेजा
जनापादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग,
सी.वी.ए.एस. बीकानेर

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र

जैव विविधता का हमारे जीवन में काफी महत्व है। विभिन्न प्रकार के जीवों की अपनी अलग अलग भूमिका है, जो प्रकृति को संतुलित रखने तथा हमारे जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने तथा सतत विकास के लिए संसाधन प्रदान करने में अपना योगदान करती है। जैव विविधता के मानव जीवन में महत्व को ध्यान में रखते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के द्वारा पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र की स्थापना की गई है।

इस केन्द्र के प्रमुख कार्य में विभिन्न प्रकार के जीवों को होने वाले जैविक व अजैविक खतरों के बारे में पता लगाना व उनसे बचाव के विभिन्न उपायों/प्रयासों का पता लगाकर जीवों का संरक्षण करना है। साथ ही पशुधन की नस्लों व जीवों की स्थिति का आंकलन कर उनके संरक्षण का उपाय बताना है। इस केन्द्र द्वारा जीवों के संरक्षण जैसे इनसीटू संरक्षण एवं एक्स सीटू संरक्षण पर भी कार्य किया जा रहा है। आमजन को जागरूक करने के लिए इस केन्द्र द्वारा समय–समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों व पशुचिकित्सा शिविरों का आयोजन भी किया जाता है। साथ ही विभिन्न प्रकार की पुस्तिकाओं का भी वितरण आमजन में किया जा रहा है। पशुपालकों व किसानों में जीवों के महत्व के प्रति जागरूकता के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम के साथ–साथ संदेश सुविधा, डिजिटल सग्रंहालय व कियोस्क की व्यवस्था भी की गई है, जिससे लाभकारी योजनाओं व जीवों के महत्व की सूचनाएं अधिक से अधिक दी जा सके।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जुलाई, 2017

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, भेड़, बकरी	बाँसवाड़ा, भरतपुर, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, दौसा, झुंझुनू, सवाई माधोपुर, अलवर, सिरोही, बाड़मेर, चूरू, अजमेर, सीकर
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, चूरू, नागौर, अजमेर, कोटा, पाली, सिरोही, जोधपुर
चेचक (माता रोग)	बकरी, भेड़, ऊँट	बीकानेर, जैसलमेर, जयपुर, बाड़मेर, जालोर, हनुमानगढ़, जोधपुर
गलघोंटू	गौवंश, भैंस	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर, भरतपुर, दौसा, टोंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, सिरोही, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
ठप्पा रोग (लंगड़ा बुखार)	गौवंश, भैंस	जयपुर, बीकानेर, झुंझुनू, अलवर, जैसलमेर, चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़, सीकर
फड़किया	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बाँसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, अलवर, नागौर, धौलपुर, झुन्झुनू, अजमेर
सर्रा (तिबरसा)	ऊँट, भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, कोटा, बून्दी, भरतपुर
थाइलेरिओसिस, बबेसिओसिस	गौवंश	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, बून्दी, चूरू
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि एवं फीता –कृमि)	गौवंश, भैंस, बकरी, ऊँट	बीकानेर, सीकर, धौलपुर, अलवर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, कोटा, राजसमन्द, भरतपुर, उदयपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अपने स्वदेशी भेड़ वंश को पहचानें

मालपुरा नस्ल भेड़ : गौरव प्रदेश का

मालपुरा नस्ल की भेड़ टोंक, सवाई माधोपुर, अजमेर, जयपुर, दौसा जिलों में प्रमुखतया से पाई जाती है। इसका नाम टोंक जिले के मालपुरा तालुके के नाम पर रखा गया है जहां इसका उद्‌भव हुआ है। दिखने में मालपुरा नस्ल सोनाढ़ी नस्ल जैसी है लेकिन सोनाढ़ी से यह नस्ल भारी होती है तथा ऊन की मात्रा व गुणवत्ता सोनाढ़ी भेड़ से बेहतर है। इसका चेहरा हल्के भूरे रंग का होता है जो गर्दन तक फैला होता है। नर व मादा दोनों ही सींग रहित होते हैं। इनके कान छोटे नलीदार होते हैं जिसके ऊपर उपास्थि का बना छोटा अनुलग्नक होता है। इसकी नाक आम तौर पर रोमन होती है। इसकी ऊन सफेद व बहुत खुरदरी मोटी होती है। साल में प्रति भेड़ से लगभग एक किलो ऊन प्राप्त हो जाती है। ऊन के रेशे की लम्बाई 7–10 सेमी. तथा व्यास लगभग 43 माइक्रॉन होता है। मादा भेड़ लगभग 400 ग्राम दूध भी दे देती है जिसे पशुपालक मैमने का दूध छूडाने के बाद दुहता है। वयस्क नर का भार लगभग 49 किलोग्राम तथा मादा का लगभग 37 किलोग्राम होता है। यह एक साल में एक मैमने को जन्म देती है। लगभग 2 साल की उम्र में पहली बार ब्याती है। मालपुरा नस्ल को मुख्यतया ऊन व मांस के लिए पाला जाता है। इसे उत्तर–पश्चिम अर्द्ध शुष्क क्षेत्र में प्रमुख मांस उत्पादन करने वाली नस्ल माना जाता है।

सफलता की कहानी

बकरी पालन और पोल्ट्री अपनाकर निहाल हुआ युवा इंजीनियर इन्द्रजीत

पॉलिटेक्निक इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) के राजियासर स्टेशन के 26 वर्षीय युवक इन्द्रजीत छींपा ने सरकारी नौकरी नहीं मिलने से निराश होने के बजाय पोल्ट्री और बकरी पालन को अपनी आजीविका का जरिया बना लिया। परिवार की तीस बीघा जमीन पर ही आज 35 बकरियां हैं। उन्होंनें पोल्ट्री फॉर्म को दो हजार चूजे लाकर विकसित किया हैं। इन्द्रजीत नौकरी के लिए भटकते–भटकते एक दिन सूरतगढ़ में वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र पहुंचे और पशुपालन व्यवसाय बाबत जानकारी हासिल की। प्रशिक्षण वैज्ञानिकों ने उन्हें पशुपालन के लिए प्रेरित किया। इस युवक ने इधर–उधर भटकने के बजाय स्वंय का व्यवसाय शुरू करने की ठान ली। केन्द्र पर समय–समय पर होने वाले प्रशिक्षणों में भाग लिया तथा केन्द्र से सम्पर्क बढ़ता गया। केन्द्र के अधिकारियों से व्यवसाय के बारे में पूरी जानकारियां प्राप्त की। केन्द्र के मार्ग–दर्शन से इन्द्रजीत ने 20 मार्च, 2017 को बकरी फार्म शुरू किया एवं इसके बाद 23 जून 2017 को पोल्ट्री (मुर्गी) फॉर्म शुरू किया। इस कम अंतराल में ही इन्द्रजीत को काफी संतुष्टि मिली। इन्द्रजीत अब स्व–रोजगार युक्त होकर पूरी तरह संतुष्ट है। नौकरी के लिए इधर–उधर भटक कर समय बर्बाद करने वाले युवाओं के लिए इन्होंने नजीर पेश की हैं। **सम्पर्क : इन्द्रजीत छींपा : राजियासर 9782696281**

निदेशक की कलम से...

पशुधन की खुशहाली के लिए संचार माध्यमों का उपयोग करें

पशुपालक अपने पारंपरिक ज्ञान से छोटी–मोटी बीमारियों का उपचार देशी नुस्खों का उपयोग करके करने में सिद्धहस्त है लेकिन बदलती जलवायु परिस्थितियों में रोगाणुओं की बढ़ती क्षमता से पशुधन को बचाना भी हमारी प्रमुख जिम्मेदारी बनती है। असामयिक दुर्घटनाओं, महामारियों और अन्य संक्रामक रोगों से अपने कीमती पशुधन को बचाने के लिए पशुचिकित्सक की सलाह और अत्याधुनिक चिकित्सा सेवाओं का उपयोग किया जाना भी जरूरी है। पशुचिकित्सा विज्ञान के आधुनिक तौर तरीकों के लिए पशुचिकित्सा विशेषज्ञ के साथ पशुपालक और कृषकों का उचित समन्वय और संवाद का होना आवश्यक है। राज्य का अधिकांश पशुपालन दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्र में निवास करता है। पशुपालकों के लिए इनका परिवहन करना भी एक दुरूह और खर्चीला कार्य है। ऐसे में उपलब्ध दूरसंचार संसाधनों के माध्यम का उपयोग करने के लिए हमें जागरूक रहना होगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के पशुपालक और किसानों के हित में दूरसंचार माध्यमों का उपयोग करते हुए पशुचिकित्सा विशेषज्ञों की सेवाएं सुलभ करवाई है। जिनकी पूरी जानकारी प्राप्त करके आप उपयोग में ले सकते है। राजुवास ने इसके लिए वॉयस मैसेज सर्विस सेवाएं प्रारंभ की है। इस नेटवर्क से जुड़कर आप घर बैठे पशुचिकित्सा एवं पशुपालन की सेवाओं का लाभ उठा सकते है। विश्वविद्यालय द्वारा टोल फ्री हैल्पलाइन नम्बर 1800–180–6224 पर चौबीसों घंटे विशेषज्ञों से संवाद स्थापित कर परामर्श प्राप्त किया जा सकता है। इनके साथ–साथ राज्य के सभी आकाशवाणी केन्द्रों से प्रतिमाह पशुपालन से सम्बद्ध 6 वैज्ञानिक विशेषज्ञ वार्ताओं का प्रसारण भी किया जा रहा है। इन सेवाओं का उपयोग आप कहीं भी रहकर कर सकते है और यह हमारे पशुधन की खुशहाली, निरोगी और उत्पादकता बढ़ाने में मददगार हैं। आईए, इनका उपयोग सुनिश्चित करें। **–प्रो. आर.के.धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414283388**

देश के पशुधन में सिरमोर राजस्थान

राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा प्रदेश है। ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली अधिकांश जनसंख्या की आजीविका कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर है और यह राज्य के ग्रामीणों की आय का एक प्रमुख जरिया है। राजस्थान ने अपने उन्नत पशुधन से एक अलग पहचान कायम की है। पशुपालन से सालाना 150 हजार करोड़ रूपये से अधिक की आय होती है। 19वीं पशुगणना के आंकड़ों के अनुसार राजस्थान प्रदेश 11.27 प्रतिशत पशुधन के साथ देश में दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। राष्ट्र के परिपेक्ष्य में राज्य पशुधन संपदा की स्थिति यहां प्रस्तुत की जा रही है।

❖ पशुधन सम्पदा में 11.27 प्रतिशत भागीदारी के साथ देश में दूसरे स्थान पर	❖ राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में 11 प्रतिशत का योगदान
❖ भैंस वंश में 11.94 प्रतिशत भागीदारी के साथ देश में दूसरे स्थान पर	❖ 5.34 करोड़ किलोग्राम प्रति दिन दुग्ध उत्पादन के साथ देश में दूसरा स्थान
❖ पशुधन सम्पदा में बकरी वंश में 16.03 प्रतिशत भागीदारी के साथ देश में पहले स्थान पर	❖ 18 करोड़ किलोग्राम प्रतिवर्ष मांस उत्पादन के साथ देश में पांचवां स्थान
❖ पशुधन सम्पदा में उष्ट्र वंश में 81.37 प्रतिशत भागीदारी के साथ देश में पहले स्थान पर	❖ देश के ऊन उत्पादन में 30 प्रतिशत भागीदारी के साथ देश में पहले स्थान पर

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया